पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली

खण्ड–XXIX अंक–19 15 अक्टूबर, 2024

अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्व प्रवर्तते। इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः।।

मैं वायुदेव ही सम्पूर्ण जगत् की उत्पत्ति का कारण हूँ और मुझसे ही सब जगत् चेष्टा करता है, इस प्रकार समझकर श्रद्धा और भक्ति से युक्त बुद्धिमान भक्तजन मुझे परमेश्वर को ही निरन्तर भजते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता 10/8

कम्प्यूटर प्रयोक्ता समिति (सीयूसी)

कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त विज्ञप्ति संख्या IITD/AREG/4(16)/2024/317004 दिनांक 10.09.2024 के अनुसार निदेशक महोदय ने शैक्षिक वर्ष 2024–2025 के लिए कम्प्यूटर प्रयोक्ता समिति की सदस्यता निम्नानुसार अनुमोदित की है।

अध्यक्ष :

अध्यक्ष, कंप्यूटर सेवा केन्द्र (पदेन) श्री प्रदीप कुमार गुप्ता

सदस्य :

(क) प्रत्येक शैक्षिक विभाग/केन्द्र/स्कूल का एक प्रतिनिधि तथा 10 से अधिक संकाय सदस्यों वाले केन्द्र से एक सदस्य एवं अन्य आधे केन्द्रों का प्रतिनिधित्व प्रतिवर्ष रोटेशन के आधार पर किया जाएगा।

1.	अनुप्रयुक्त यांत्रिकी	प्रो. सौविक चक्रबर्ती
2.	जैव रासायनिक इंजीनियरी एवं जैव प्रौद्योगिकी	प्रो. अमित दास
3.	रासायनिक इंजीनियरी	प्रो. गौरव गोयल
4.	रसायन विज्ञान	प्रो. तारक कर्माकर
5.	सिविल इंजीनियरी	प्रो. मनोज एम.
6.	कम्प्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरी	प्रो. निखिल बालाजी
7.	विद्युत इंजीनियरी	प्रो. मधूसूदन सिंह
8.	मानविकी एवं समाज विज्ञान	प्रो. ईशान आनन्द
9.	प्रबन्ध अध्ययन	प्रो. प्रसन्ना आर.
10.	गणित	प्रो. कामना पोरवाल
11.	यांत्रिक इंजीनियरी	प्रो. रामाकृष्णा के.
12.	भौतिकी	प्रो. राहुल मराठे
13.	वस्त्र एवं रेशा इंजीनियरी	प्रो. जावेद नबीबक्श शेख
14.	डिजाइन	प्रो. श्रीनिवासन वेंकटरमन
15.	पदार्थ विज्ञान एवं इंजीनियरी	प्रो. एन.एस. हर्षा गुंण्डा
16.	ऊर्जा विज्ञान एवं इंजीनियरी	प्रो. राहुल गोयल
17.	वायुमंडलीय विज्ञान	प्रो. सर्वेश के. दुबे
18.	जैव चिकित्सा इंजीनियरी	प्रो. प्रदीप्ता मुखर्जी
19.	कम्प्यूटर सेवा केन्द्र	श्री सुदीप नारायन बनर्जी
20.	अनुप्रयुक्त इलेक्ट्रॉनिकी अनुसंधान केन्द्र	प्रो. नील कंठ कुंडू
21.	ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी	प्रो. काव्या दशोरा
22.	इंजीनियरी में मूल्य शिक्षा का राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र (एन.आर.सी.वी.ई.ई.)	प्रो. राहुल गर्ग
23.	प्रकाशिकी एवं फोटोनिक्स	प्रो. परवेन्दर कुमार
24.	कुसुमा जैव विज्ञान स्कूल	प्रो. सरन कुमार
25.	सार्वजनिक नीति स्कूल	प्रो. रजर्षि दास गुप्ता
26.	भारती दूरसंचार प्रौद्योगिकी एवं प्रबंध स्कूल	प्रो. सांतनु मन्ना
27.	कृत्रिम बौद्धिकता स्कूल	प्रो. सुदीप नारायन बेनर्जी
	कंप्यूटर सेवा केन्द्र में प्रचालन प्रणालियों और प्रयोक्ता सेवा के तीन प्रभारी	1. श्री गोपाल कृष्ण 2. डॉ. मनीष अग्रवाल 3 सुश्री जया
	छात्र कार्य परिषद के चार नामिती	1. सागर (2021CYZ8381) 2. प्रेरणा जोशी (2023PHZ8307) 3. रवि कुमार (2022CRZ8497) 4. मिहिर पाटकर (2023MEP2750)
	अध्यक्ष, परामर्श सेवा (पदेन)	सह संकायाध्यक्ष, (छात्र कल्याण)
	सदस्य–सचिव अध्यक्ष, कम्प्यूटर सेवा केन्द्र या उनके नामिति	डॉ. अजय गुलेरिया, कम्प्यूटर सेवा केन्द्र

सन्दर्भ की शर्तें –

कम्प्यूटर प्रयोक्ता समिति (CUC) केन्द्रीय आई.टी. अवसंरचना, सिस्टम एवं सेवाओं तथा नेटवर्क अवसंरचना के उपयोग से संबंधित संस्थान उपभोक्ताओं की अभिगम (Access) नीतियों की समीक्षा तथा अनुशंसा करती है। अन्तिम उपयोगकर्त्ता की आवश्यकताओं के आधार पर विद्यार्थियों, संकाय तथा स्टाफ सहित परिसर तथा दूरस्थ स्थानों पर उपयुक्त हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर अभिगम (Access) नीतियों को सुनिश्चित करने के लिए रणनीतियों को अपनाती / संशोधित करती है।

स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/2024/324419 दिनांक 03.10.2024 के अनुसार **डॉ. अमित कौर** ने 01.10.2024 से संस्थान के स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

त्यागपत्र स्वीकृत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2024/320785 दिनांक 20.09.2024 के अनुसार **प्रो. अंशुल शर्मा,** पोस्ट डॉक्टरल फेलो (SeNSE) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 20.09.2024 से स्वीकार कर लिया है। अतः प्रो. अंशुल शर्मा 20.09.2024 से संस्थान कार्य से मुक्त हो गए हैं।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2024/317728 दिनांक 11.09.2024 के अनुसार **डॉ. सोनम आचार्य,** पोस्ट डॉक्टरल फेलो (कार्ट) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 13.09.2024 से स्वीकार कर लिया है। अतः डॉ. सोनम आचार्य 13.09.2024 से संस्थान कार्य से मुक्त हो गए हैं।

सवा सेर गेंहू

मुंशी प्रेचंद

किसी गाँव में शंकर नामी एक किसान रहता था। सीधा–सादा गरीब आदमी था। अपने काम से काम, न किसी के लेने में, न किसी के देने में, छक्का–पंजा न जानता था। छल–कपट की उसे छूत भी न लगी थी। ठगे जाने की फिक्र न थी। विद्या न जानता था। खाना मिला तो खा लिया न मिला तो चरबन पर कनाअत की। चरबन भी न मिला तो पानी लिया और राम का नाम लेकर सो रहा। मगर जब कोई मेहमान दरवाजे पर आ जाता तो उसे ये इस्तिग्ना का रास्ता तर्क कर देना पड़ता था। खुसूसन जब कोई साधू महात्मा आ जाते थे तो उसे लाजिमन दुनियावी बातों का सहारा लेना पड़ता। खुद भूका सो सकता था मगर साधू को कैसे भूका सुलाता। भगवान के भगत जो ठहरे।

एक रोज शाम को एक महात्मा ने आकर उसके दरवाजे पर डेरा जमा दिया। चेहरे पर जलाल था। पीताम्बर गले में, जटा सर पर, पीतल का कमंडल हाथ में, खड़ाऊँ पैर में, ऐनक आँखों पर, गरज कि पूरा भेस उन महात्मा का सा था जो रऊसा के महलों में रियाजत, हवा–गाड़ियों पर मंदिरों का तवाफ और योग (मुराकिबा) में कमाल हासिल करने के लिए लजीज गिजाएँ खाते हैं! घर में जौ का आटा था, वो उन्हें कैसे खिलाता ? जमाना–ए–कदीम में जौ की ख्वाह कुछ अहमियत रही हो, मगर जमाना–ए–हाल में जौ की खूरिश महात्मा लोगों के लिए सकील और देर–हज्म हुई है, बड़ी फिक्र हुई कि महात्मा जी को क्या खिलाऊँ?

आखिर तय किया कि कहीं से गेहूँ का आटा उधार लाऊँ। गाँव भर में गेहूँ का आटा न मिला। गाँव भर में सब आदमी ही आदमी थे, देवता एक भी न था, देवताओं को खूरिश कैसे मिलती ? खुश–किस्मती से गाँव के पुरोहित जी के यहाँ थोड़े से गेहूँ मिल गए। उनसे सवा सेर गेहूँ उधार लिए और बीवी से कहा कि पीस दे। महात्मा ने खाया। लंबी तान कर सोए और सुबह आशीर्वाद दे कर अपना रास्ता लिया।

पुरोहित जी साल में दो बार खलियानी लिया करते थे। शंकर ने दिल में कहा कि सवा सेर गेहूँ क्या लौटाऊँ। पंसेरी के बदले कुछ ज्यादा खलियानी दे दूँगा। वो भी समझ जाएँगे, मैं भी समझ जाऊँगा। चैत में जब वो पुरोहित जी पहुँचे तो उन्हें डेढ़ पंसेरी के करीब गेहूँ दे दिए और अपने को सुबुक–दोश समझ कर इसका कोई तजकिरा न किया। पुरोहित जी ने भी फिर कभी न माँगा। सीधे–साधे शंकर को क्या मालूम कि ये सवा सेर गेहूँ चुकाने के लिए मुझे दुबारा जन्म लेना पड़ेगा ?

सात साल गुजर गए। पुरोहित जी ब्राम्हण से महाजन हुए। शंकर किसान से मजदूर हो गया। उसका छोटा भाई मंगल उस से अलग हो गया था। एक साथ रह कर दोनों किसान थे, अलग हो कर दोनों मजदूर हो गए थे। शंकर ने बहुत चाहा कि निफाक की आग भड़कने न पावे। मगर हालत ने उसको मजबूर कर दिया। जिस वक्त अलग चूल्हे जले वो फूट–फूट कर रोया। आज से भाई–भाई दुश्मन हो जाएँगे। एक रोऐ तो दूसरा हँसेगा, एक के घर में गमी होगी तो दूसरे के घर गुलगुले पकेंगे। मुहब्बत का रिश्ता, दूध का रिश्ता आज टूटा जाता है।

उसने सख्त मेहनत कर के खानदानी इज्जत का ये दरख्त लगाया था। उसे अपने खून से सींचा था, उसका जड़ से उखड़ना देख कर उसके दिल के टुकड़े हुए जाते थे। सात रोज तक उसने दाने की सूरत भी न देखी। दिन भर जेठ की धूप में काम करता और रात में लपेट कर सो रहता। इस सख्त रंज और ना–काबिल–ए–बर्दाश्त तकलीफ ने खून को जला दिया, गोश्त और चर्बी को घुला दिया। बीमार पड़ा तो महीनों चारपाई से न उठा। अब गुजर–बसर कैसे हो ? पाँच बीघे के आधे खेत रह गए, एक बैल रह गया। खेती क्या खाक होती। आखिर यहाँ तक नौबत पहुँची कि खेती सिर्फ नाम भर को रह गई। मआश का सारा भार मजदूरी पर आ पड़ा।

सात साल गुजर गए। एक दिन शंकर मजदूरी कर के लौटा तो रास्ते में पुरोहित

जी ने टोक कर कहा, "शंकर कल आके अपने बीज बैंक का हिसाब कर ले। तेरे यहाँ साढे पाँच मन गेहूँ कब से बाकी पड़े हैं और तू देने का नाम नहीं लेता। क्या हज्म करने का इरादा है ?"

शंकर ने तअ'ज्जुब से कहा, "मैंने तुम से कब गेहूँ लिए थे कि साढ़े पाँच मन हो गए ? तुम भूलते हो, मेरे यहाँ न किसी छटाँक भर अनाज है, न एक पैसा उधार।"

पुरोहित, "इसी निय्यत का तो ये फल भोग रहे हो, खाने को नहीं जुड़ता।"

ये कह पुरोहित जी ने उसका सवा सेर गेहूँ का जिक्र किया जो आज से सात साल क़ब्ल शंकर को दिए थे। शंकर सुन कर साकित रह गया। मैंने कितनी बार उन्हें खलियानी दी। उन्होंने मेरा कौन सा काम किया। जब पोथी पत्रा देखने, साअत–शगुन बिचारने द्वार पर आते थे तो कुछ न कुछ दछिना ले ही जाते थे। इतना स्वार्थ! सवा सेर अनाज को लेकर अंडे की तरह ये भूत खड़ा कर दिया। जो मुझे निगल ही जाएगा। इतने दिनों में एक बार भी कह देते तो गेहूँ दे ही देता। क्या इसी निय्यत से चुप बैठे रहे। बोला, "महाराज नाम लेकर तो मैंने इतना अनाज नहीं दिया, मगर कई बार खलियानी में सेर–सेर, दो–दो सेर दे दिया है। अब आप आज साढे पाँच मन माँगते हो, मैं कहाँ से दूँगा ?"

पुरोहित, "लेखा जौ जौ, बक्सीस सौ सौ। तुम ने जो कुछ दिया होगा, खलियानी में दिया होगा, उसका कोई हिसाब नहीं। चाहे एक की जगह चार पंसेरी दे, तुम्हारे नाम ही में साढे पाँच मन लिखा हुआ। जिस से चाहे हिसाब लगवा लो। दे दो तो तुम्हारा नाम झीक (काट) दूँ, नहीं तो और बढ़ता रहेगा।"

शंकर, "पांडे, क्यों एक गरीब को सताते हो, मेरे खाने का ठिकाना नहीं, इतना गेहूँ किस के घर से दूँगा।"

पुरोहित, "जिसके घर से चाहे लाओ, मैं छटाँक भर भी न छोड़ूँगा। यहाँ न दोगे, भगवान के घर तो दोगे।

शंकर काँप उठा। हम पढ़े लिखे लोग होते तो कह देते, "अच्छी बात है, ईश्वर के घर ही देंगे। वहाँ की तूल यहाँ से कुछ बड़ी तो न होगी। कम से कम इसका कोई सबूत हमारे पास नहीं। फिर उसकी क्या फिक्र?" मगर शंकर इतना अक्लमंद, इतना चालाक न था। एक तो कर्ज, वो भी ब्रह्मण का! बही में नाम रहेगा तो सीधे नरक में जाऊँगा। इस खयाल से ही उसके रोंगटे खड़े हो गए। बोला, "महाराज तुम्हारा जितना होगा यहीं दूँगा। ईश्वर के यहाँ क्यों दूँ ? इस जन्म में तो ठोकर खा ही रहा हूँ, उस जन्म के लिए क्यों काँटे बोऊँ? मगर ये कोई न्याय नहीं है। तुम ने राई का पर्वत बना दिया। ब्राम्हण हो के तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। उसी घड़ी तकाजा कर के लिया होता तो आज मेरे ऊपर बड़ा बोझ क्यों पड़ता? मैं तो दे दूँगा, लेकिन तुम्हें भगवान के यहाँ जवाब देना पड़ेगा?"

पुरोहित, "वहाँ का डर तुम्हें होगा। मुझे क्यों होने लगा। वहाँ तो सब अपने ही भाई बंद हैं। ऋषि मुनी सब तो ब्राम्हण ही हैं। कुछ बने बिगड़ेगी, सँभाल लेंगे। तो कब देते हो?"

शंकर, "मेरे पास धरा तो है नहीं, किसी से माँग–जाँच कर लाऊँगा तभी दूँगा।"

पुरोहित, "मैं ये न मानूँगा। सात साल हो गए। अब एक का भी मुलाहिजा न करूँगा। गेहूँ नहीं दे सकते तो दस्तावेज लिख दो।"

शंकर, "मुझे तो देना है। चाहे गेहूँ ले लो। चाहे दस्तावेज लिखवाओ। किस हिसाब से दाम रखोगे?"

पुरोहित, "जब दे ही रहे हो तो बाजार भाव काटूँगा। पाव भर छुड़ा कर क्यों बुरा बनूँ।"

हिसाब लगाया गया तो गेहूँ की कीमत साठ रुपया बनी। साठ का दस्तावेज लिखा गया। तीन रुपये सैकड़ा सूद। साल भर में न देने पर सूद की शरह साढ़े तीन रुपये सैकड़ा। आठ आने का स्टैंप, एक रुपया दस्तावेज की तहरीर शंकर को अलाहिदा देनी पड़ी।

सारे गाँव ने पुरोहित जी की मजम्मत की, मगर सामने नहीं। महाजन से सभी को काम पड़ता है। उसके मुँह कौन लगे?

शंकर ने साल भर तक सख्त रियाजत की मीयाद से कब्ल उसने रुपया अदा करने का बरत सा कर लिया। दोपहर को पहले भी चूल्हा न जलता था, सिर्फ चरबन पर बसर होती थी। अब वो भी बंद हुआ। सिर्फ लड़के के लिए रात को रोटियाँ रख दी जातीं। एक पैसे की तंबाकू रोज पी जाता था। यही एक लत थी जिसे वो कभी न छोड़ सका था। अब वो भी इस कठिन बरत के भेंट हो गई। उसने चिलम पटक दी, हुक्का तोड़ दिया और तंबाकू की हाँडी चूर–चूर कर डाली। कपड़े पहले भी तर्क की इंतिहाई हद तक पहुँच चुके थे। अब वो बारीक–तरीन कुदरती कपड़ों में मुंसलिक हो गए। माघ की हड्डियों तक में सरायत कर जाने वाली सर्दी को उसने आग के सहारे काट दिया।

इस अटल इरादे का नतीजा उम्मीद से बढ़ कर निकला। साल के आखरि तक उसके पास साठ रुपया जमा हो गए। उसने समझा कि पण्डित जी को इतने रुपये दे दूँगा और कहूँगा, महाराज बाकी रुपये भी जल्दी आप के सामने हाजिर कर दूँगा। पंद्रह की तो और बात है। क्या पण्डित जी इतना भी न मानेंगे। उसने रुपये लिए और ले जा कर पण्डित जी के कदमों पर रख दिए।

पण्डित जी ने मुतअ'ज्जिब हो कर पूछा, "किसी से उधार लिया क्या?"

शंकर, "नहीं महाराज! आप की असीस से अब की मजूरी अच्छी मिली।"

पण्डित जी, "लेकिन ये तो साठ ही हैं।"

शंकर, "हाँ महाराज! इतने अभी ले लीजिए। बाकी दो तीन महीने में दे दूँगा। मुझे उऋण कर दीजिए।"

पण्डित जी, "उऋण तो जभी होंगे, जब मेरी कौड़ी–कौड़ी चुका दोगे? जाकर मेरे पंद्रह और लाओ।"

शंकर, "महाराज! इतनी दया करो। अब साँझ की रोटियों का भी ठिकाना नहीं है। गाँव में हूँ तो कभी न कभी दे ही दूँगा।"

पण्डित, "मैं ये रोग नहीं पालता। न बहुत बातें करना जानता हूँ। अगर मेरे पूरे रुपये न मिलेंगे तो आज से साढ़े तीन

रुपये सैकड़ा का ब्याज चलेगा। इतने रुपये चाहे अपने घर में रखो चाहे मेरे यहाँ छोड़ जाओ।"

शंकर, "अच्छा, जितना लाया हूँ, उतना रख लीजिए। मैं जाता हूँ, कहीं से पंद्रह और लाने की फिक्र करता हूँ।"

शंकर ने सारा गाँव छान मारा, मगर किसी ने रुपये न दिए। इसलिए नहीं कि उसका एतिबार न था, या किसी के पास रुपये न थे, बल्कि पण्डित जी के शिकार को छेड़ने की किसी में हिम्मत न थी।

अमल के बाद रद्द–ए–अमल का क़ुदरती कायदा है। शंकर साल भर तक तपस्या करने पर भी जब कर्ज बे–बाक करने में कामयाब न हुआ तो उसकी एहतियात मायूसी की शक्ल में तबदील हो गई। उसने समझ लिया कि जब इतनी तकलीफ उठाने पर साल भर में साठ रुपये से ज़्यादा न जमा कर सका तो अब कौन सा उपाय है, जिस से उसके दूने रुपये जमा हों।

जब सर पर कर्ज का बोझ ही लदना है तो क्या मन भर और क्या सवा मन का। उसकी हिम्मत पस्त हो गई। मेहनत से नफरत हो गई। उम्मीद ही हौसला की पैदा करने वाली है। उम्मीद में रौनक है, ताकत है, जिंदगी है, उम्मीद ही दुनिया की मुतहर्रिक करने वाली कुव्वत है।

शंकर मायूस हो कर बे–परवा हो गया। वो जरूरतें जिनको उसने साल भर तक टाल रखा था। अब दरवाजे पर खड़ी होने वाली भिकारनें न थीं, बल्कि सर पर सवार होने वाली चुड़ैलें थीं, जो अपना चढ़ावा लिए बगैर जान ही नहीं छोड़तीं। कपड़ों में पैवंद लगने की भी एक हद होती है। अब शंकर को हिसाब मिलता तो रुपये जमा न करता। कभी कपड़े लाता और कभी खाने की कोई चीज। जहाँ पहले तंबाकू पिया करता था, वहाँ अब गाँजा और चरस का चस्का भी लगा। उसे अब रुपये अदा करने की कोई फिक्र न थी। गोया उस पर किसी का एक पैसा भी न था। पहले लर्जा आ जाने पर भी वो काम करने जरूर जाता था। अब काम पर न जाने का बहाना तलाश किया करता।

इस तरह तीन साल गुजर गए। पण्डित जी महाराज ने एक बार भी तकाजा न किया। वो होशियार शिकारी की तरह तीर–ब–हदफ निशाना लगाना चाहते थे। पहले से शिकार को भड़का देना उनके शेवे के खिलाफ था।

एक रोज पण्डित जी ने शंकर को बुलाया। हिसाब दिखाया। साठ रुपये जमा थे, वो मिन्हा करने पर भी अब शंकर के जिम्मे एक सौ बीस रुपये निकले।

"इतने रुपये तो उसी जन्म में दूँगा। इस जन्म में नहीं हो सकता।"

पण्डित, "मैं इसी जन्म में लूँगा। अस्ल न सही सूद तो देना ही पड़ेगा।"

शंकर, "एक बैल है वो ले लीजिए। एक झोंपड़ी है, वो ले लीजिए, और मेरे पास रखा क्या है?"

पण्डित, "मुझे बैल बधिया लेकर क्या करना है। मुझे देने को तुम्हारे पास बहुत कुछ है।"

शंकर, "और क्या है महाराज।"

पण्डित, "कुछ नहीं है, तुम तो हो ? आखिर तुम भी कहीं मजदूरी करने ही जाते हो। मुझे भी खेती करने के लिए एक मजदूर रखना ही पड़ता है। सूद में तुम हमारे यहाँ काम किया करो। जब सुभिता हो अस्ल भी दे देना। सच तो ये है कि अब तुम दूसरी जगह काम करने के लिए जा नहीं सकते। जब तक मेरे रुपये न चुका दो। तुम्हारे पास कोई जायदाद नहीं है। इतनी बड़ी गठरी मैं किस एतिबार पर छोड़ दूँ? कौन इसका जिम्मा लेगा, तुम मुझे महीने महीने सूद दिए जाओगे। और कहीं कमा कर जब तुम मुझे सूद भी नहीं दे सकते तो अस्ल की कौन कहे?"

शंकर, "महाराज! सूद में तो काम करूँगा और खाऊँगा क्या?"

पण्डित, "तुम्हारी घर वाली है, लड़के हैं। क्या वो हाथ पैर कटा बैठेंगे, तुम्हें आध सेर जौ रोज चरबन के लिए दे दिया करूँगा। ओढ़ने के लिए साल में कम्बल पा जाओगे। एक सलूका भी बनवा दिया करूँगा और क्या चाहिए? ये सच है कि और लोग तुम्हें छः आने रोज देते हैं लेकिन मुझे ऐसी गरज नहीं है। मैं तो तुम्हें अपने रुपये भराने के लिए रखता हूँ।"

शंकर ने कुछ देर तक गहरे सोच में पड़े रहने के बाद कहा, "महाराज! ये तो जन्म भर की गुलामी हुई?"

पण्डित, "गुलामी समझो, चाहे मजूरी समझो। मैं अपने रुपये भराए बिना तुम्हें न छोड़ूँगा। तुम भागोगे तो तुम्हारा लड़का। हाँ जब कोई न रहेगा, तब की बात दूसरी है।"

इस फैसले की कहीं अपील न थी। मजदूर की जमानत कौन करता? कहीं पनाह न थी ? भाग कर कहाँ जाता? दूसरे रोज से उसने पण्डित जी के हाँ काम करना शुरू कर दिया। सवा सेर गेहूँ की बदौलत उम्र भर के लिए गुलामी की बेड़ियाँ पाँव में डालनी पड़ीं। उस बद–नसीब को अब अगर किसी खयाल से तस्कीन होती थी तो इसी से कि ये सब मेरे पिछले जन्म का भोग है। औरत को वो काम करने पड़े थे जो उसने कभी न किए थे। बच्चे दाने–दाने को तरसते थे, लेकिन शंकर चुप देखने के सिवा और कुछ न कर सकता था। वो गेहूँ के दाने किसी देवता बुद्ध की तरह तमाम उम्र उसके सर से न उतरे।

शंकर ने पण्डित जी के यहाँ बीस बरस तक गुलामी करने के बाद इस गम–कदे से रेहलत की। एक सौ बीस अभी तक उसके सर पर सवार थे। पण्डित जी ने उस गरीब को ईश्वर के दरबार में तकलीफ देना मुनासिब न समझा। पस उन्होंने उसके जवान बेटे की गर्दन पकड़ी। आज तक वो पण्डित जी के यहाँ काम करता है। उसका उधार कब अदा होगा, होगा भी या नहीं, ईश्वर ही जाने।

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 7144

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com